38

क्षेत्रवाद

(Regionalism)

इस अध्याय में हम जानेंगे :

- क्षेत्रवाद का अर्थ एवं परिभाषाएं
- क्षेत्रीयता की प्रकृति
- क्षेत्रीयता के विकास के कारण
- क्षेत्रीयता के दुष्परिणाम
- क्षेत्रीयता को रोकने के उपाय

भारत में जिन अवधारणाओं ने सामाजिक-राजनीतिक जीवन में अपना प्रभाव विस्तृत किया है उनमें क्षेत्रवाद (Regionalism) भी एक है। इस क्षेत्रवाद या क्षेत्रीयता का जन्म कब और कैसे हुआ यह बताना तो कठिन है, पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि आज इसका जो उग्र रूप प्रगट हुआ है, वह राष्ट्रीय एकता की समस्या को और भी गम्भीर बना देता है।

क्षेत्रवाद का अर्थ एवं परिभाषाएं

(Meaning and Definitions of Regionalism)

एक क्षेत्र के लोग केवल अपने ही क्षेत्र के स्वार्थों को सर्वोपरि मानते हुए उनकी रक्षा करने का प्रयत्न करते हैं। इस संकीर्ण रूप में क्षेत्रवाद या क्षेत्रीयता का अर्थ उन आदर्श, व्यवहार, विचार तथा कार्यक्रमों से होता है जो कि एक क्षेत्र-विशेष के लोगों के मन में मिथ्या गौरव व श्रेष्ठता की भावना को पनपाते हैं और उसी आधार पर वे अपने लिए समस्त राजनीतिक तथा आर्थिक सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए इस भांति तत्पर हो जाते हैं। क्षेत्रवाद की प्रमुख परिभाषाएं निम्नलिखित हैं–

☛ **बोगार्डस**–*यदि किसी भौगोलिक क्षेत्र का आर्थिक साधन इस भांति विकसित हो जाए कि उनके लिए अपनी विलक्षणता को बनाए रखना सम्भव हो तो*

Scanned with CamScanner

वहां के लोगों में सामूहिक हितों का विकास और इस प्रकार क्षेत्रीय आदर्शों का विकास हो सकता है। यहीं से क्षेत्रीयता की नींव पड़ती है।"

राधाकमल मुकर्जी—*"क्षेत्रीयता, राष्ट्रीयता के अधीन है।"*

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि क्षेत्रीयता एक क्षेत्र-विशेष में निवास करने वाले लोगों के अपने क्षेत्र के प्रति वह विशेष लगाव व अपनेपन की भावना है जिसे कि कुछ सामान्य आदर्श, व्यवहार, विचार तथा विश्वास के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है।

क्षेत्रीयता के विकास के कारण
(Factors in the Emergence of Regionalism)

(1) भौगोलिक कारक (Geographical Factors)—बहुधा भौगोलिक कारण क्षेत्रीयता के विकास का एक अत्यन्त प्रभावपूर्ण कारक बन जाता है। भारत उसका एक उत्तम उदाहरण है। भारत चार स्पष्ट भौगोलिक क्षेत्रों में स्वाभाविक रूप से विभक्त है और वे क्षेत्र हैं—उत्तर का पर्वतीय प्रदेश, गंगा-सिन्धु का विशाल मैदान, दक्षिणी पठार तथा मध्य भारत का रेगिस्तानी क्षेत्र। इन चारों क्षेत्रों की भौगोलिक दशाएं अलग-अलग ही नहीं, कुछ विषयों में एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत भी हैं। फलतः विभिन्न क्षेत्रों या प्रदेशों में जो विभाजन हुआ उसका प्रभाव जीवन के प्रत्येक पक्ष पर पड़ा और एक क्षेत्र के सामाजिक, धार्मिक रीति-रिवाज, भाषा, सांस्कृतिक परम्पराएं, पोशाक, आभूषण, प्राकृतिक खान-पान, रहन-सहन आदि दूसरे क्षेत्रों से भिन्न रहे। इस भिन्नता ने क्षेत्रीयता के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

(2) ऐतिहासिक कारण (Historical Factors)—भौगोलिक कारकों की भांति ऐतिहासिक कारक भी क्षेत्रीयता के विकास में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। इस देश की विशालता और विभिन्न क्षेत्रों के होने से भारत प्राचीन और मध्य काल में विस्तृत प्रादेशिक राज्यों का देश रहा। यद्यपि कुछ शक्तिशाली महत्त्वाकांक्षी राजाओं ने ऐसे साम्राज्य स्थापित किए जिनमें सारा भारत था फिर भी यातायात के साधनों के अभाव में एक अखंड केन्द्रीय राज्य अधिक दिनों तक भारत में बना न रह सका। भारत के ऐतिहासिक विकास के दौरान एक बार नहीं, असंख्य बार ऐसा ही हुआ जिसके फलस्वरूप क्षेत्रीय स्वशासन को स्थापित करने की इच्छा इस देश की एक राजनीतिक परम्परा बन गई।

(3) राजनीतिक कारक (Political Factors)—अनेक राजनीतिक कारक भी क्षेत्रीयता के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान करते हैं। भारत में कुछ राजनीतिक संगठन या पार्टियां ऐसी हैं जोकि क्षेत्रीयता की भावना को भड़काकर लोकप्रिय होने का प्रयत्न करती हैं और साथ ही अपने संकीर्ण स्वार्थों की सिद्धि करने में सफल होती हैं। इस प्रकार क्षेत्रीय दल (Regional Parties) क्षेत्रीयता के विकास के महत्त्वपूर्ण कारक बन जाते हैं।

(4) सांस्कृतिक कारक (Cultural Factors)—क्षेत्रीयता के विकास में सांस्कृतिक कारक भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। भारत की भौगोलिक परिस्थितियों ने भारत को न केवल कुछ भौगोलिक क्षेत्रों में अपितु उतने ही सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी बांट दिया है। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र का अपना एक विशिष्ट सांस्कृतिक जीवन-प्रतिमान (Life Pattern) है और उस प्रतिमान से एक अजीब लगाव उस क्षेत्र के लोग पनपा चुके

Scanned with CamScanner

हैं। यह लगाव कभी-कभी इतना स्पष्ट व एकतरफा हो जाता है कि एक क्षेत्र के लोग अपने सांस्कृतिक प्रतिमान को अन्य क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक श्रेष्ठ समझने लगते हैं।

(5) भाषावाद (Linguism)—सांस्कृतिक कारकों में क्षेत्रीयता के विकास का एक महत्त्वपूर्ण कारक भाषावाद ही है। भारत में स्थिति यह है कि उप-सांस्कृतिक क्षेत्र (Sub-cultural Region) के मुख्य समूह के सदस्य एक विशेष भाषा को बोलते तथा लिखते हैं। उन्हें क्षेत्रीय या प्रादेशिक भाषा (Regional Language) कहा जाता है। प्रत्येक प्रादेशिक भाषा के बोलने वालों का अपनी भाषा के प्रति अत्यधिक संवेगात्मक (Emotional) लगाव होता है जिसके फलस्वरूप वे यह मान बैठते हैं कि उनकी ही भाषा की शैली, शब्दावली, साहित्यिक समृद्धि तथा गहनता अन्य सभी भाषाओं से कहीं अधिक आकर्षक व श्रेष्ठ है। केवल अपनी ही भाषा को इस प्रकार श्रेष्ठ समझना और अन्य सभी प्रादेशिक भाषाओं को हेय मान लेना प्रादेशिक दूरी को बढ़ाता है और क्षेत्रीयता का विकास करता है।

क्षेत्रीयता के दुष्परिणाम
(Evil Consequences of Regionalism)

(1) विभिन्न क्षेत्रों के बीच संघर्ष तथा तनाव (Conflict and Tension between different Regions)—संकीर्ण क्षेत्रवाद का जो सर्वप्रथम दुष्परिणाम हमें भारत में देखने को मिलता है वह यही है कि इसके कारण विभिन्न क्षेत्रों के बीच आर्थिक, राजनीतिक, यहां तक कि मनोवैज्ञानिक संघर्ष और तनाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इसका कारण यह है कि प्रत्येक क्षेत्र अपने स्वार्थों या हितों को सर्वोच्च स्थान दे बैठता है और उसे यह चिन्ता नहीं होती कि उससे दूसरे क्षेत्रों को कितना नुकसान होगा।

(2) राज्य तथा केन्द्रीय सरकार के बीच सम्बन्धों को विकृत होना (Deformation of Centre and State Relations)—भारत में क्षेत्रीयता के कारण केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकार के बीच का सम्बन्ध कभी-कभी अत्यन्त कटु रूप धारण कर लेता है। केन्द्रीय सरकार जिसकी तरफ भी थोड़ा-सा झुक गई वही विवाद का विषय बन जाता है और केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों का पारस्परिक सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण नहीं रह जाता है।

(3) स्वार्थी नेतृत्व व संगठन का विकास (Emergence of Self Centred Leadership and Organization)—क्षेत्रीयता का एक और दुष्परिणाम यह होता है कि इसके फलस्वरूप अलग-अलग क्षेत्र में कुछ इस प्रकार के नेतृत्व व संगठनों को विकास हो जाता है जो कि जनता की भावनाओं को उभारकर अपने संकीर्ण स्वार्थों की पूर्ति करना चाहते हैं। ऐसे नेताओं और संगठनों से किसी का कुछ भी भला नहीं होता, फिर भी क्षेत्रीयता की आड़ में इन्हें पनपने का अच्छा मौका मिल जाता है।

(4) भाषा की समस्या का अधिक जटिल होना (Language Problem becomes More Complex)—क्षेत्रीयता का एक और बुरा प्रभाव यह होता है कि क्षेत्रीय वफादारी (Regional Loyalty) भाषा की समस्या को सुलझाने में सहायक होने के स्थान पर उसे और भी जटिल बनाने में मदद करती है। क्षेत्रीय वफादारी का सीधा सम्बन्ध या प्रादेशिक

Scanned with CamScanner

भाषा के प्रति विशेष लगाव से होता है जिसके कारण प्रादेशिक भाषा को आवश्यकता से अधिक महत्त्व प्रदान करने की गलती उस क्षेत्र के लोग कर बैठते हैं। परिणाम यह होता है कि अन्य किसी भाषा के प्रति सहिष्णुता की भावना बिल्कुल ही नहीं रह जाती और विभिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रों के बीच भाषा के प्रश्न को लेकर ही कटुता बढ़ती चली जाती है।

(5) राष्ट्रीय एकता को चुनौती (Challenge to National Integration)—संकीर्ण क्षेत्रीयता राष्ट्रीय एकता के लिए चुनौती बन जाती है। भारत आज एक संक्रमण काल (Transitional Period) से गुजर रहा है। इस नाजुक दौर पर सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में परिवर्तन की गति एक समान नहीं है। अतः देश की सामाजिक व्यवस्था में असन्तुलन की स्थिति विद्यमान होनी स्वाभाविक ही है। क्योंकि क्षेत्रीयता के फलस्वरूप विभिन्न क्षेत्रों के लोगों में कभी क्षेत्रीय स्वार्थों को कभी राजनीतिक स्वशासन या पृथक् राज्य के प्रश्न को लेकर, तो कभी प्रादेशिक भाषा के प्रश्न को लेकर झगड़े तथा मन-मुटाव उत्पन्न हो जाते हैं वे राष्ट्रीय एकता के लिए घातक ही सिद्ध होते हैं।

क्षेत्रीयता को रोकने के उपाय
(Measures for Checking Regionalism)

राष्ट्रीय जीवन के लिए क्षेत्रीयता कोई अच्छी चीज नहीं है। इस पर रोक लगाना ही उचित है। एक सम्बन्ध में निम्नलिखित उपायों को सुझाया जा सकता है—

(1) केन्द्रीय सरकार की नीति कुछ इस प्रकार की होनी चाहिए कि सभी उप-सांस्कृतिक क्षेत्रों (Sub-cultural Regions) का सन्तुलित आर्थिक विकास सम्भव हो जिससे कि विभिन्न क्षेत्रों के बीच आर्थिक तनाव कम-से-कम हो।

(2) सभी क्षेत्र के लोगों को समान आर्थिक सुविधाएं प्रदान की जाएं जिससे कि अनावश्यक प्रतिस्पर्द्धा व ईर्ष्या की भावना पनप न सके।

(3) भाषा सम्बन्धी झगड़ों का हल शीघ्र ही ढूंढ लिया जाए। इस सम्बन्ध में सबसे उचित हल यह है कि सभी क्षेत्रीय भाषाओं को समान मान्यता प्रदान की जाए।

(4) हिन्दी भाषा को किसी भी क्षेत्रीय समूह पर जबरदस्ती लादा न जाए अपितु उस भाषा का प्रचार व विस्तार इस ढंग से किया है कि विभिन्न क्षेत्रीय समूह स्वतः ही इसे सम्पर्क-भाषा (Link Language) के रूप में स्वीकार कर लें।

(5) प्रचार के विभिन्न साधनों के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों के सांस्कृतिक लक्षणों के विषय में लोगों के सामान्य ज्ञान को बढ़ाया जाए जिससे कि एक क्षेत्र के लोग दूसरे क्षेत्र के प्रति अधिक सहनशीलता की भावना को न पनपा सकें।

(6) केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में सभी क्षेत्रों के नेताओं का सन्तुलित प्रतिनिधित्व हो जिससे कि क्षेत्रीय पक्षपातपूर्ण नीतियों का खण्डन हो सके और केन्द्रीय सरकार के इरादों पर किसी को भी सन्देह न रहे।

क्षेत्रीय का वास्तविक हल तब तक सम्भव नहीं जब तक प्रत्येक भारतवासी के मन में यह भावना जड़ न पकड़ ले कि अपना क्षेत्र तो अपना है ही, पर उससे भी कहीं विशाल एक क्षेत्र-भारत उससे कहीं अधिक अपना है।

Scanned with CamScanner